





हो प्रवर्णी
भी ह्युता
हान न्य हे
हो नो वर्ज
स्ती व ह्य
स्तोम श हे
तरी प्रे दे
त श्री उ दे
नो वि प्रा
वे त र यो
शः ए त हि
क्षो पा दो

विज्ञा गो नि
ने ह्ये ते पा
या त्तु पा द
दि ती व श
द श्चु ता क
प न्न न त उ
ट स्य द्या वि
सि द्वा र शि
त ह्यो रु के
न्यै र तो ल
हे र्द के ते घा
त न ह्य श



सोम
श्री
ज्ञान
श्रीने
स्त्री
श्री
त्ररं
तश्च
गो
वेत
शः
द्वो

देवपातनादिनागोनि
योर्बोद्धवमित्येतेपादा
रं॥३॥ अत्रुहात्रुपादा
प्रदंन्यत्रदिहोदितोवश
तयोसिमधुलेदश्चुताक
गु अत्तुर्वैष्टपनागतं
कीनुदात्रंषट्स्वस्वाहि
दशै॥एकाश्रीश्रीहादु
नस्योतममहारागुवे
तीतैर्वाएष्यैरतोक्त्वा
एकएकपदैरेकैतेषा
वस्येपादतनराश





हो प्रवर्णाश्रमं योः
भीक्ष्ण्युः ॐ दमः
ज्ञानस्य हेतवः। वि
हो नो कर्त्तव्यं वि
स्त्री वं न स्त्री को क
स्तोमश रेप रेधा।
त्ररां प्रे रे ब्र लति
तश्चैतु देशः। पा
नौ वि घात्रे पुनः
वेतरयो र्हेतु व
शः। एतद्विका रा
दो पादौ द्विपदौ

नां विना गो नि स
प्रतमि खिने पाद
पुत्रा त्रं तु पादा
दि हो दि तो व श
धु छं द म्भु ता व
वै ट प ना रु त वं
त्रं प ट स्त स्त्री दि
को रो शी द्वा र्दि
तम म च्च रं तु वी
एयं चै र वो ल्य
प र्दे र्द क्ते पा
प द त रं न द श

